

रॉबर्ट वानॉय , प्रमुख भविष्यवक्ता, व्याख्यान 4

यशायाह 2:1-4:6 की खोज

समीक्षा

हम यशायाह के शुरुआती भाग को देख रहे हैं; और वह पहला खंड 1-6, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, तीन खंडों में विभाजित है, जो निर्णय के बयानों से शुरू होता है और आशीर्वाद के बयानों के साथ समाप्त होता है। हमने पिछले घंटे 1:1 से 2:5 तक मुख्य रूप से 2:1-4 पर ध्यान केंद्रित किया, जो यशायाह में आशीर्वाद का एक प्रसिद्ध मार्ग है। यह भविष्य के आशीर्वाद का एक बयान है जब तलवारों को पीट-पीट कर हल के फाल में बदल दिया जाएगा, और प्रभु का वचन सिंथ्योन से निकलेगा। हमने उसकी व्याख्या के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों पर चर्चा की। आज सुबह मैं शुरू में जो करना चाहता हूँ वह अगले भाग पर जाना है, जो 2:6 से 4:6 तक है। फिर से निर्णय वाले अनुभाग के बारे में कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ करने के लिए, लेकिन अधिकांश भाग के लिए आगे बढ़ें और 4:2-6 पर ध्यान केंद्रित करें, जो उस अनुभाग के अंत में आता है।

यशायाह 2:5 तो आइए पाठ पर वापस जाएँ। 2:5 के बाद, जो एक उपदेश था, आशीर्वाद के उस भाग के अंत में जिसे हमने पिछले घंटे में देखा था। हमारे पास वास्तव में एक नया खंड शुरू हुआ है। देखें, 2:5 कहता है, "आओ, हे याकूब के घराने, हम प्रभु के प्रकाश में चलें।" यह प्रभु ही है जो 2:1-4 में वर्णित अद्भुत कार्यों को पूरा करेगा। 2:5 के बाद, वह उपदेश, यशायाह अपने समय के लोगों के पाप की ओर लौटता है। तो अध्याय 2 के बनाम 5 और 6 के बीच एक वास्तविक विभाजन बिंदु है। मैं वास्तव में सोचता हूँ कि केवल एक पद्य विभाजन की तुलना में वहाँ एक बेहतर अध्याय विभाजन है क्योंकि आपके विचार में 2:5 और 2 पर समाप्त होने वाले विचारों में वास्तव में एक बड़ा बदलाव है। :6 निंदा और निर्णय का एक लंबा मार्ग शुरू होता है।

यशायाह 2:8 निंदा और सार्वभौमिक न्याय नोटिस श्लोक 8: "उनका देश मूर्तियों से भरा है; वे अपने हाथों के काम के आगे झुकते हैं।" जब आप पद 10 तक पहुँचते हैं, 10 से 21 तक, आपने न्याय के समय का चित्रण किया है। जब आप 10 से 21 तक पढ़ते हैं तो वास्तव में ऐसा लगता है कि

यह विश्व न्याय का समय है। यह सार्वभौमिक है; न केवल निर्णय का कोई स्थानीय तात्कालिक संकट, बल्कि एक विश्व निर्णय। और मुझे लगता है कि यशायाह यहां जो करता है वह एक विषय का परिचय देता है जिसे आप बाद में उसकी पुस्तक में पाएंगे। याद रखें यशायाह अध्याय 24 से 27 वह खंड है जिसे अक्सर "यशायाह का छोटा सर्वनाश" कहा जाता है। और आपने 24-27 में इस आने वाले विश्व न्याय को यहां की तुलना में कहीं अधिक विस्तार से चित्रित किया है। लेकिन यहां ऐसा लग रहा है जैसे इसकी आशंका जताई जा रही है। पुस्तक में बाद में इस पर और काम किया गया है।

नोटिस श्लोक 10 शुरू होता है, "चट्टानों में जाओ, प्रभु के भय और उसकी महिमा के तेज से जमीन में छिप जाओ।" श्लोक 12 को देखें: "सर्वशक्तिमान यहोवा ने सभी अभिमानियों और ऊँचे लोगों के लिए एक दिन रखा है, क्योंकि जो ऊँचे हैं, वे नम्र कर दिए जाएंगे।" श्लोक 17: "मनुष्यों का अहंकार नीचा किया जाएगा, और मनुष्यों का घमण्ड नीचा किया जाएगा; उस दिन केवल यहोवा ही महान् होगा; मूर्तियां पूरी तरह गायब हो जाएंगी. जब यहोवा पृथ्वी को कम्पित करने के लिये उठेगा, तब उसके भय और उसके प्रताप के मारे लोग चट्टानों की गुफाओं और भूमि के बिलों में भाग जायेंगे।" वही वाक्यांश 21 के अंत में है: "प्रभु का भय और उसकी महिमा की महिमा, जब वह पृथ्वी को हिलाने के लिए उठता है।" तो 2:10 से 21 तक ऐसा लगता है जैसे आपके पास सार्वभौमिक दायरे के इस आने वाले फैसले की एक तस्वीर है। उस विषय को अध्याय 24-27 में और विकसित किया गया है।

यशायाह 2:22-3:15 तात्कालिक स्थिति: गैर-जिम्मेदार नेताओं का आचरण लेकिन जब आप श्लोक 22 पर आते हैं, तो ऐसा लगता है कि यशायाह तत्काल स्थिति की ओर अधिक ध्यान दे रहा है। 2:22 से लेकर 3:15 तक, तात्कालिक स्थिति में, अधिकांश भाग का ध्यान गैर-जिम्मेदार नेताओं के आचरण पर है। जी हां, गैरजिम्मेदार नेताओं का आचरण. उसके कारण इस्राएल का न्याय किया जाएगा और वह न्याय निःसंदेह बेबीलोन की बन्धुवाई के साथ साकार होगा। तो यह कोई दूर का भविष्य, सार्वभौमिक निर्णय नहीं है, बल्कि अधिक तात्कालिक, अधिक स्थानीयकृत निर्णय है। फिर, मैं इस श्लोक दर श्लोक पर काम करने के लिए समय नहीं लेने जा रहा हूँ, लेकिन श्लोक 22 इस कथन से शुरू होता है "उस आदमी पर भरोसा करना बंद करो, जिसकी नासिका में केवल एक

सांस है। वह किस खाते का है?”

अध्याय 3 , श्लोक 2 कहता है, “...वीर और योद्धा, न्यायाधीश और भविष्यवक्ता, भविष्यवक्ता और बुजुर्ग, पचास का सेनापति, रैंक का आदमी, परामर्शदाता, कुशल कारीगर और चतुर जादूगर। मैं लड़कोंको उनका अधिकारी बनाऊंगा; केवल बच्चे ही उन पर शासन करेंगे। लोग एक-दूसरे पर अत्याचार करेंगे-आदमी बनाम आदमी, पड़ोसी बनाम पड़ोसी।” अध्याय 3 में श्लोक 12 पर जाएँ : “युवा मेरी प्रजा पर अन्धेर करते हैं, स्त्रियाँ उन पर शासन करती हैं। हे मेरी प्रजा, तेरे मार्गदर्शक तुझे भटका देते हैं; वे तुम्हें मार्ग से भटका देते हैं। प्रभु अदालत में अपना स्थान लेता है”—पद 14—“अपने लोगों के बुजुर्गों और नेताओं के खिलाफ: 'यह तुम ही हो जिसने मेरे अंगूर के बगीचे को बर्बाद कर दिया है; कंगालों की लूट तुम्हारे घरों में है। मेरे लोगों को कुचलने और गरीबों के चेहरे पीसने से आपका क्या मतलब है?' प्रभु, सर्वशक्तिमान प्रभु की घोषणा करता है।” निंदा का सामान्य ध्यान देश में मौजूद अयोग्य नेताओं पर केंद्रित प्रतीत होता है। यशायाह 3:16-4:1 अध्याय 3 के श्लोक 16 से 4:1 तक

सिथ्योन की बेटियों की निंदा करता है, यह 3 के अंत में एक दुर्भाग्यपूर्ण अध्याय विभाजन है। वास्तविक विराम 4:1 के बाद है, 3:26 पर नहीं . लेकिन 3:16 से 4:1 तक यशायाह सिथ्योन की बेटियों, यरूशलेम की महिलाओं की निंदा करता है, जो वहां हैं: गर्व, अहंकार, भौतिकवाद, गलत मूल्य। हमने पिछली तिमाही में उस अंश को देखा था। यह इन महिलाओं का एक उत्कृष्ट वर्णन है। "प्रभु कहते हैं, 'सिथ्योन की स्त्रियाँ घमण्डी हैं, गर्दन फैलाकर चलती हैं, आँखें तरेरती हैं, कदमों से लड़खड़ाती हैं, टखनों में आभूषण झनझनाती हैं। इस कारण यहोवा सिथ्योन की स्त्रियोंके सिर पर फोड़े डालेगा; प्रभु उनकी खोपड़ी गंजा कर देगा।" आने वाले फैसले में संपन्नता और दिखावटीपन के बीच एक विरोधाभास है। “उस दिन यहोवा उनका साज-सज्जा छीन लेगा: चूड़ियाँ, सिर की पट्टियाँ, अर्धचंद्राकार हार, झुमके, कंगन, घूंघट, टोपी और टखने की चेन, और कमरबंद, इत्र की बोतलें और आकर्षण, हस्ताक्षर अंगूठियां, नाक की अंगूठियां, बढ़िया वस्त्र , टोपी, और लबादे, पर्स, और दर्पण और सनी के वस्त्र, और मुकुट, और शॉल। सुगन्ध के स्थान पर दुर्गन्ध होगी; सैश के बजाय, एक रस्सी; अच्छे से संवरे बालों की जगह गंजापन; सुन्दर वस्त्र की सन्ती टाट का कपड़ा;

खूबसूरती की जगह ब्रांडिंग. तेरे पुरूष तलवार से, और तेरे योद्धा युद्ध में मारे जाएंगे। सिथ्योन के फाटक विलाप और विलाप करेंगे; वह निराश्रित होकर जमीन पर बैठेगी।” और आप 4:1 में एकदम सही देखते हैं, "उस दिन सात स्त्रियाँ एक पुरूष को पकड़कर कहेंगी, 'हम अपना खाना आप ही खाएँगी, और अपने वस्त्र आप ही देंगी;' केवल हमें आपके नाम से बुलाया जाए। हमारा अपमान दूर करो! "तो वास्तविक ब्रेकिंग पॉइंट 4:1 के बाद है। यहां फोकस यरूशलेम की इन महिलाओं पर फैसले पर है। आप देखिए, यह निर्णय का दूसरा खंड है। यह 2:6 से 4:1 तक जाता है।

यशायाह 4:2-6 भविष्य का आशीर्वाद तब हमारे पास भविष्य के आशीर्वाद का यह दूसरा संक्षिप्त अंश 4:2 से शुरू होता है, और यहीं पर मैं अपना समय बिताना चाहता हूं। आज हमारे सत्र का पहला भाग 4:2-6 पर है: “उस दिन यहोवा की शाखा सुन्दर और महिमामय होगी, और भूमि की उपज इस्राएल में बचे हुए लोगों का गौरव और महिमा होगी। जो सिथ्योन में बचे हुए हैं, और यरूशलेम में बचे हैं, वे सब पवित्र कहलाएंगे। यहोवा सिथ्योन की स्त्रियोंकी अशुद्धता दूर करेगा; वह न्याय की आत्मा और आग की आत्मा के द्वारा यरूशलेम से खून के धब्बे साफ करेगा। तब यहोवा सारे सिथ्योन पर्वत के ऊपर, और जो वहां इकट्ठे होते हैं उनके ऊपर दिन को धूँ का बादल, और रात को धधकती हुई आग की चमक उत्पन्न करेगा; सारी महिमा के ऊपर एक छत्र छाया रहेगा। वह दिन की गर्मी से बचने के लिये आड़ और छाया होगी, और तूफ़ान और वर्षा से बचने के लिये शरण और छिपने का स्थान होगा।” सचमुच, आने वाले दिनों के लिए आशीर्वाद का समय!

"वह दिन" ध्यान दें कि यह वाक्यांश "उस दिन" से शुरू होता है। यह निर्धारित करने का प्रयास करना हमारे हित में है कि "उस दिन" का क्या अर्थ है। इस संदर्भ में, आपको वही अभिव्यक्ति 3:18 में, 4:1 में और फिर 4:2 में मिलती है। यदि आप 3:18 पर वापस जाएँ तो हम पढ़ते हैं, "उस दिन यहोवा उनका वैभव छीन लेगा।" उस दिन बिल्कुल स्पष्ट प्रतीत होता है कि सिथ्योन की स्त्रियों पर न्याय का दिन आने वाला है। 4:1 में, "उस दिन सात स्त्रियाँ एक पुरूष को पकड़ लेंगी" भी न्याय के दिन की बात कर रहा है। फिर 4:2 में: "उस दिन प्रभु की शाखा सुन्दर और महिमामय होगी।" यहां ऐसा प्रतीत होता है कि इन तीनों सन्दर्भों का सन्दर्भ एक ही दिन से नहीं है। 3:18 और 4:1 विनाश

और सज़ा का उल्लेख करते हैं जो ऐसा प्रतीत होता है कि यह कुछ ऐसा है जो निकट भविष्य में आने वाला है। जबकि 4:2 और उसके बाद का संदर्भ दूर के भविष्य के समय - आशीर्वाद के समय - के संदर्भ में प्रतीत होता है।

कभी-कभी दुःभाषिए "उस दिन" वाक्यांश की व्याख्या हमेशा किसी विशेष दिन के संदर्भ में करने का प्रयास करते हैं और यहां तक कि इसे "प्रभु के दिन" के बराबर भी बना देते हैं। अक्सर "प्रभु का दिन" हमेशा युगांतकारी के रूप में देखा जाता है। लेकिन यदि आप उपयोग को देखें तो आप पाएंगे कि यह हमेशा युगांतकारी नहीं है। इसका उपयोग यिर्मयाह के समय में कारकेमिश की लड़ाई के लिए किया गया था। इसका उपयोग यशायाह 13:9 में किया गया है: "प्रभु का दिन आ रहा है - क्रोध और भयंकर क्रोध के साथ एक क्रूर दिन।" वहां संदर्भ बेबीलोन शहर पर निर्णय का है। मेडीज़ बेबीलोन को हराने जा रहे हैं। 13:17 में यह कहा गया है, "मैं मादियों को उनके विरुद्ध भड़काऊंगा, जो न चाँदी की परवाह करते हैं और न सोने से प्रसन्न होते हैं," इत्यादि। बाबुल वैसा ही होगा जैसा परमेश्वर ने सदोम और अमोरा को उलट दिया था। तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्रभु का दिन हमेशा युगान्तकारी नहीं होता, न ही "वह दिन" सदैव युगान्तकारी होता है। आपको "उस दिन" जैसे वाक्यांश को लेते समय और इसे एक तकनीकी शब्द बनाते समय सावधान रहना होगा। आपको शब्दों को देखना होगा और उनका उपयोग कैसे किया जाता है।

इस मामले में, यशायाह 4:2 में, मुझे लगता है कि इसका सीधा सा मतलब उस दिन से है जिसके बारे में मैं बोलने वाला हूँ। "उस दिन यहोवा की शाखा सुन्दर और महिमामय हो जाएगी।" जिस दिन के विषय में मैं बोलने वाला हूँ, उस दिन ये बातें घटित होने वाली हैं। अब, प्रश्न यह उठता है: यहाँ उल्लिखित आशीर्वाद का विशिष्ट समय क्या है? यह भविष्यवाणी कब पूरी होती है?

यशायाह 2:1-4 और मीका 4:2-6 में अंतर करते हुए, इसे और अधिक विस्तार से देखने से पहले, मैं एक सामान्य टिप्पणी करना चाहता हूँ। मैं यह पिछले परिच्छेद के संबंध में कर रहा हूँ। यह एक ऐसा परिच्छेद है जिसमें व्याख्याकार बहुत भिन्न हैं। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि अध्याय 4 में अध्याय 2 की तुलना में एक अलग प्रकार की स्थिति का वर्णन किया गया है। यानी 2:1-4 में आशीर्वाद के इस संक्षिप्त खंड में। यदि आप 4:2-6 पढ़ते हैं, तो एक अलग तरह की स्थिति होती है।

स्वर अलग है; आत्मा अलग है. 2:2-4 और इसका बड़ा संदर्भ मीका के समान है: आपके पास हर आदमी अपनी-अपनी बेल और अंजीर के पेड़ के नीचे बैठा है और उन्हें डराने की कोई बात नहीं है। वे सब सिष्योन से निकलते हैं; तलवारों को पीट-पीट कर हल के फाल बना दिया जाता है; वे अब युद्ध नहीं चाहते. उन्हें डराने वाली कोई बात नहीं है. भगवान ने शांति और बाहरी सुरक्षा का समय स्थापित किया है जिसमें खतरा दूर हो जाता है। अध्याय 2 में यही स्थिति प्रतीत होती है। खतरा टल गया है।

अध्याय 4 में मुझे सामान्य स्वर काफी भिन्न प्रतीत होता है। श्लोक 5 और 6 को देखें: “तब यहोवा सारे सिष्योन पर्वत के ऊपर, और जो लोग वहां इकट्ठे होते हैं उनके ऊपर दिन को धूँ का बादल, और रात को धधकती हुई आग की चमक उत्पन्न करेगा; सारी महिमा के ऊपर एक छत्र छाया रहेगा। वह दिन की गर्मी से आश्रय और छाया, तूफान और वर्षा से शरण और छिपने का स्थान होगा।” बेशक, आपके पास वहां एक आंकड़ा है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि अध्याय 4 के छंद 5 और 6 में आपके पास एक ऐसे समय का वर्णन है जिसमें अभी भी बचाव की आवश्यकता है। अभी भी वह चीज़ है जो खतरा पैदा कर सकती है; अभी भी वह खतरा है. आपको तूफान और बारिश से बचने के लिए छिपने की जगह चाहिए। जाहिर है, अभी भी कुछ ऐसा है जो नुकसान पहुंचा सकता है या घायल कर सकता है, लेकिन ईश्वर उससे सुरक्षा दे रहा है। बेशक, पद 5 और 6 की भाषा हमें जंगल में इज़राइल की याद दिलाती है जब भगवान ने लोगों को बादल और आग के साथ मार्गदर्शन प्रदान किया था जो उन्हें जंगल के माध्यम से ले गया था। वह जंगल में भटकना कठिनाई और खतरे का समय था। ऐसा लगता है कि श्लोक 5 और 6 में आपके पास एक तीर्थ यात्रा का चित्र है जिसमें भगवान अपने लोगों को उनके आसपास होने वाले नुकसान से बचाते हैं। तो मुझे ऐसा लगता है कि अध्याय 4 में आपके पास अध्याय 2 की सहस्राब्दी शांति और सुरक्षा से काफी अलग समय है। अध्याय 4 एक ऐसे समय की बात करता है जब भगवान अपने लोगों को आशीर्वाद देते हैं और उनकी रक्षा करते हैं, उन्हें विपत्ति के बीच में ले जाते हैं। अब, यदि यह सहस्राब्दी नहीं है, तो मुझे ऐसा लगता है कि कम से कम इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि हम यहां "यरूशलेम" और "सिष्योन" को कैसे समझते हैं, जो पहले इस्तेमाल किए गए शब्द हैं। श्लोक 3 में कहा गया है, "जो सिष्योन में बचे हैं, और यरूशलेम में बचे हैं, वे सब पवित्र कहलाएंगे, अर्थात्

यरूशलेम में रहनेवालों में से जितनों का नाम लिखा है।" मुझे ऐसा लगता है कि शायद हमें यरूशलेम और सिव्योन को किसी भी समय परमेश्वर के सच्चे लोगों के लिए आलंकारिक अभिव्यक्ति के रूप में समझना चाहिए। हम उस पर वापस आएं और उस पर अधिक विस्तार से विचार करेंगे, लेकिन मैं इसे सिर्फ एक सुझाव के रूप में पेश करता हूँ कि आपके पास यहां जो कुछ है वह उस तरीके की एक तस्वीर है जिसमें भगवान इतिहास के सभी अवधियों के माध्यम से अपने सच्चे लोगों का नेतृत्व करते हैं।

यशायाह 4:2 प्रभु की शाखा लेकिन उस पर थोड़ा आगे चर्चा करने से पहले, आइए पीछे जाएं और खंड के पहले पद को देखें। अभिव्यक्ति "उस दिन" के बाद, जिसके बारे में मैं बोलने वाला हूँ, आप पढ़ते हैं "प्रभु की शाखा सुंदर और गौरवशाली होगी, और भूमि का फल इस्राएल में बचे लोगों का गौरव और गौरव होगा।" प्रश्न यह है कि, "प्रभु की शाखा" क्या है? "प्रभु की शाखा सुंदर और महिमामय होगी," और निःसंदेह यह तत्काल प्रश्न उठाता है, भूमि का फल क्या है? "यहोवा की शाखा सुंदर और महिमामय होगी," और इसके समानांतर, "भूमि का फल इस्राएल में बचे लोगों के लिए गौरव और गौरव होगा।" अब उस वाक्यांश और उसके समानांतर, "प्रभु की शाखा" और "भूमि का फल" की व्याख्या तीन अलग-अलग तरीकों से की गई है। सबसे पहले, दोनों वाक्यांशों को शाब्दिक अर्थ में समझा जा सकता है। हम शाब्दिक आलंकारिक छंद के इस प्रश्न पर वापस आ गए हैं। यदि शाब्दिक रूप से लिया जाए, तो यह कहता है कि जो लोग इज़राइल में सुरक्षित हैं, उनके लिए बगीचे और वनस्पति उद्यान सुंदर और शानदार होंगे। शाखाओं, बगीचों, धरती के फलों, सब्जियों के बगीचों और उपज के बारे में बात की जा रही है। "यहोवा की शाखा सुंदर और महिमामय होगी, भूमि का फल इस्राएल में बचे हुए लोगों का गौरव और गौरव होगा।" इसलिये जो लोग इस्राएल में सुरक्षित हैं उनके लिये बाग और सब्जियाँ सुंदर और महिमामय होंगी। अपने उद्धरण संग्रह को देखें, पृष्ठ 10, पृष्ठ के शीर्ष पर, जे. बार्टन पायने के पहले पैराग्राफ से। यशायाह 4:2 में - और कई अन्य स्थानों पर - यशायाह 4:2 में यशायाह ने भविष्यवाणी की, "उस दिन" - भविष्य के मसीहाई साम्राज्य में - "प्रभु की शाखा सुंदर और गौरवशाली होगी। भूमि का फल उत्तम होगा।" इस बिंदु पर शाखा मसीहा प्रतीत नहीं होती है, जैसा कि 11:1 में है। (नीचे संख्या 39 देखें।)

"लेकिन दूसरी पंक्ति में समानता शाब्दिक कृषि वृद्धि का पक्ष लेती है।" तो पायने वह व्यक्ति है जो कृषि वृद्धि की बात करते हुए इसे बिल्कुल शाब्दिक मानता है। यह इसकी व्याख्या करने का एक तरीका है।

वाक्यांश की व्याख्या करने का दूसरा तरीका यह है कि: पहले वाक्यांश को मसीह के आलंकारिक संदर्भ के रूप में लिया जा सकता है। "प्रभु की शाखा सुन्दर और महिमामय होगी।" और दूसरा वाक्यांश, "पृथ्वी का फल," अपने शाब्दिक अर्थ में कृषि को संदर्भित करता है। यहां वे दो भागों में बंट गये हैं। यह दृष्टिकोण बताता है कि "प्रभु की शाखा" एक आलंकारिक मसीहाई संदर्भ है, फिर भी "फल" से संबंधित दूसरा वाक्यांश वस्तुतः कृषि उत्पादकता के संदर्भ में लिया जाता है। तीसरा दृष्टिकोण दोनों वाक्यांशों को मसीह के आलंकारिक संदर्भ के रूप में लेना है। "प्रभु की शाखा," "पृथ्वी का फल" दोनों मसीह के आलंकारिक संदर्भ हैं।

अब, इन अंतिम दो सुझावों पर कुछ टिप्पणियाँ जैसे कि आप शाब्दिक से दूर जाते हैं : मुझे ऐसा लगता है कि संदर्भ इस बात को असंभावित बनाता है कि संदर्भ केवल कृषि का है। जब आप शेष अनुच्छेद को पढ़ते हैं, तो जिन आशीर्वादों का वर्णन किया गया है वे भौतिक चीजों, भौतिक समृद्धि पर जोर नहीं देते हैं; वे आध्यात्मिक चीजों पर जोर देते हैं। वे खतरे और बुराई से ईश्वर की सुरक्षा पर जोर देते हैं। और इसमें यह तथ्य भी जोड़ा गया है कि वाक्यांश, "प्रभु की शाखा", संदर्भ में कहीं और होता है जहां यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट है कि वाक्यांश मसीहा को संदर्भित करता है।

अब यह दिलचस्प है कि यदि आप एक सुसंगतता को देखें तो आप पाएंगे कि 18 हिब्रू शब्द हैं जिनका अनुवाद किंग जेम्स संस्करण में अंग्रेजी शब्द "ब्रांच" द्वारा किया गया है। दूसरे शब्दों में, जब आप अंग्रेजी में "शाखा" पढ़ते हैं, तो आप हमेशा एक ही हिब्रू शब्द नहीं पढ़ते हैं। अंग्रेजी शब्द *शाखा के पीछे* आप 18 अलग-अलग हिब्रू शब्द पा सकते हैं। यहाँ जो प्रयोग किया गया है वह *समक* है। मुझे लगता है कि हमें ध्यान देना चाहिए कि यह यशायाह 11:1 में प्रयुक्त नहीं है; यशायाह 11:1 *नेज़र* है।

देखिए, यशायाह 11:1 एक बहुत ही परिचित मार्ग है। तुम वहाँ पढ़ते हो, "यिशै के ठूठ में से एक अंकुर निकलेगा; उसकी जड़ से एक शाखा फल उत्पन्न करेगी। प्रभु की आत्मा उस पर विश्राम करेगी--।" यशायाह 11:1 में आप स्पष्ट रूप से एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं जिस पर

प्रभु की आत्मा विश्राम करने वाली है, और उस व्यक्ति को "वह शाखा जो यिशै के टूठ से निकलेगी" कहा जाता है।

जैसे-जैसे आप यशायाह 11 के माध्यम से आगे बढ़ते हैं, यह वही है जो अपना सार्वभौमिक साम्राज्य स्थापित करने जा रहा है। यह स्पष्ट रूप से मसीहाई है। फिर भी " शाखा" एक अलग हिब्रू शब्द है। लेकिन यशायाह 4:2 में जो शब्द प्रयोग किया गया है वह *समक* है, जिसका प्रयोग कई अन्य अनुच्छेदों में किया गया है जो स्पष्ट रूप से मसीहाई हैं। उदाहरण के लिए, यिर्मयाह 23:5 में लिखा है: "प्रभु की यह वाणी है, ऐसे दिन आते हैं, जब मैं दाऊद के लिये एक धर्मी शाखा उगाऊंगा"; फिर, यह स्पष्ट रूप से मसीहाई है। अगला वाक्यांश है: "एक राजा जो बुद्धिमानी से शासन करेगा और देश में न्याय और सही काम करेगा। उसके दिनों में यहूदा बचा रहेगा और इस्राएल सुरक्षित रहेगा। यही वह नाम है जिससे उसे बुलाया जाएगा।" यह न केवल दाऊद के वंश का राजा है, बल्कि उसका नाम "प्रभु हमारी धार्मिकता" है। तो आप इसे यिर्मयाह 23:5 में पाते हैं, आप इसे यिर्मयाह 33:15 में पाते हैं, आप इसे जकर्याह 3:8 और 6:12 में पाते हैं। इसलिए, उन स्थानों पर इस शब्द का उपयोग उस व्यक्ति का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो डेविड वंश का दैवीय रूप से भेजा गया राजा है। जब आप पवित्रशास्त्र की तुलना करते हैं - जो बाइबिल की व्याख्या का पहला सिद्धांत है - तो आप पवित्रशास्त्र की तुलना पवित्रशास्त्र से करते हैं यह देखने के लिए कि जिस मार्ग पर आप काम कर रहे हैं उस पर अन्य मार्ग क्या प्रकाश डाल सकते हैं; और जब आप पवित्रशास्त्र की तुलना करते हैं, तो मुझे लगता है कि ये अंश न केवल दिखाते हैं कि इस वाक्यांश की मसीहाई अर्थ में व्याख्या करना संभव है, बल्कि शायद यह मामला है कि यिर्मयाह और जकर्याह यशायाह से इसके उपयोग की प्रतिध्वनि कर रहे हैं। देखिए यशायाह के बाद यिर्मयाह और जकर्याह आते हैं, और यह बहुत संभव है कि यिर्मयाह और जकर्याह एक ऐसे शब्द का उपयोग कर रहे हैं जिससे वे पहले से ही मसीहाई अर्थ में उपयोग किए जाने से परिचित थे और वे इसे दोहरा रहे हैं। इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि "प्रभु की शाखा सुंदर और गौरवशाली होगी" को मसीहाई संदर्भ के रूप में समझने के लिए इस संदर्भ में बहुत कुछ कहा जाना बाकी है।

अब, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, कुछ लोग कहेंगे कि पहला वाक्यांश मसीहाई है क्योंकि आपके पास शाखा के साथ समानता है, लेकिन दूसरा वाक्यांश कृषि है क्योंकि आपके पास अन्य

मसीहाई संदर्भों में "भूमि के फल" के साथ समानता नहीं है। मुझे ऐसा लगता है कि यह समानता को तोड़ता है। हिब्रू में समांतरता बहुत विशेषता है। मुझे ऐसा लगता है कि आप इसके साथ किसी भी रास्ते पर जाएं, समानता बनाए रखना सबसे अच्छा है। आप या तो कृषि के बारे में बात कर रहे हैं या आप मसीहा के आने के आंकड़े के बारे में बात कर रहे हैं। इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि तीसरी व्याख्या बेहतर है - पद के दोनों हिस्सों को मसीह के लिए आलंकारिक रूप में लेना।

कुछ लोग इससे भी आगे बढ़ गए हैं और उन्होंने यहां की भाषा में व्यक्ति के दैवीय और मानवीय पहलुओं का प्रतिनिधित्व देखा है। "प्रभु की शाखा" मसीह के दिव्य स्वभाव पर जोर देती है, जबकि "पृथ्वी का फल", मसीह के मानव स्वभाव का सुझाव देता है। यहां आपके पास त्रिमूर्ति के दूसरे व्यक्ति के रूप में मसीहा की पहचान करने की दिव्य और मानवीय प्रकृति की एक सूचनात्मक गणना है। वह एक महिला का बीज है: वह एक इंसान है, पृथ्वी का फल है, फिर भी वह भगवान की शाखा है, देवता है - त्रिमूर्ति का दूसरा व्यक्ति।

अब मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि मसीह के व्यक्तित्व की दो प्रकृतियों की अवधारणा नए नियम में स्पष्ट रूप से सिखाई गई है। मुझे लगता है कि आप इसे यहां पा सकते हैं या नहीं, यह एक बड़ा प्रश्न है। मुझे लगता है कि निश्चित रूप से हम यह सवाल कर सकते हैं कि क्या यशायाह ने नए नियम में विकसित मसीह के व्यक्तित्व की प्रकृति के बारे में बाइबिल के बाद के रहस्योद्घाटन को समझा था। लेकिन फिर भी यह संभव है कि उसे पवित्र आत्मा द्वारा उन शब्दों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया गया था जो उस वास्तविकता के अनुरूप होंगे जब पूर्ण रहस्योद्घाटन उसके स्वयं को पूरी तरह से समझे बिना दिया गया था।

मेरी धारणा यह है कि वह ऐसा कर सकता है क्योंकि पवित्रशास्त्र का अंतिम लेखक पवित्र आत्मा है। ऐसा बहुत संभव लगता है कि भविष्यवक्ता जितना जानते थे उससे बेहतर बोल सकते थे। यह व्याख्याशास्त्र के मुद्दे और चर्चा का मुद्दा है। ऐसे कुछ लोग हैं जो कहेंगे कि पवित्रशास्त्र के किसी भी पाठ के लिए एकमात्र वैध अर्थ वह अर्थ है जिसे लेखक ने बोलते समय पूरी तरह से समझा था। मुझे लगता है कि यह बहुत सीमित है। वाल्टर कैसर का यह तर्क है। मुझे लगता है कि उनका उद्देश्य पवित्रशास्त्र को ऐसी दिशा में जाने से बचाने का प्रयास करना है जहां अर्थ अनिश्चित हो जाता है। व्यक्तिगत रूप से, मुझे लगता है कि यह कहना बहुत सीमित है कि पवित्र आत्मा के कार्य के

कारण एक भविष्यवक्ता जितना जानता था उससे बेहतर नहीं बोल सकता।

खैर, यह पद 2 है: "उस दिन यहोवा की शाखा सुन्दर और महिमामय होगी, भूमि की उपज इस्राएल के बचे हुआओं के लिये गौरव और महिमा होगी।" मैंने पहले बताया कि भगवान की शाखा आलंकारिक है; यह केवल कृषि संस्थाओं को लेना और उन्हें मसीह के आगमन के लिए आलंकारिक तरीके से एक संदर्भ के रूप में उपयोग करना है।

लेकिन "शाखा" क्यों चुनें? उस शब्द का प्रयोग क्यों किया गया? कुछ अंशों में यह स्पष्ट है कि यह मसीहाई है। यदि "प्रभु की शाखा" एक आकृति है, तो समानता के कारण "पृथ्वी का फल" क्यों नहीं? समानता को तोड़ने के लिए मुझे ऐसा लगता है कि आप हिब्रू के विरुद्ध जाएं। यदि यह केवल कृषि संबंधी है, तो यह संदर्भ के साथ फिट नहीं बैठता है। यदि "शाखा" मसीह के लिए एक आकृति है, तो दोनों को मसीह के लिए एक आकृति के रूप में लें। इससे आगे का अगला कदम यह है कि यह मसीह के दिव्य और मानवीय स्वभाव का सुझाव दे रहा है; मैं इसके बारे में कम निश्चित हूँ - संभव है, लेकिन हो सकता है कि यह इसे बहुत आगे बढ़ा रहा हो।

मैं कहूंगा कि आप किसी ऐसी चीज़ को छू रहे हैं जो निश्चित रूप से एक वैध मुद्दा है। युगांतशास्त्र के साथ, मैं कहूंगा कि आपको भेद करना होगा। कुछ चीज़ें दूसरों की तुलना में अधिक स्पष्ट होती हैं। मुझे नहीं लगता कि ऐसा कोई सवाल है कि सामान्य और स्पष्ट से वापस अधिक विशिष्ट की ओर कदम बढ़ाया जाए - मुझे नहीं लगता कि ऐसा कोई सवाल है जो पवित्रशास्त्र सिखाता है कि ईसा मसीह का दूसरा आगमन होगा, और यह दूसरे आगमन के साथ जुड़ा हुआ है मसीह वहाँ एक न्याय होने वाला है। उस व्यापक कालक्रम पर आपके पास पवित्रशास्त्र की स्पष्ट शिक्षा है। जब आप इस बारे में अधिक विवरण प्राप्त करना शुरू करते हैं कि ईसा मसीह के दूसरे आगमन के आसपास क्या होने वाला है और घटनाओं का क्या क्रम होने वाला है, और क्या कोई सहस्राब्दी होगी या नहीं, क्या ईसा मसीह पहले, बीच में वापस आएंगे या क्लेश के बाद - उन सभी प्रकार के प्रश्नों पर, आपके पास ऐसे मामले हैं जो चर्चा के लिए खुले हैं। मुझे लगता है कि मिलेनियम के साथ आपके पास एक मुद्दा है जो सात साल की क्लेश अवधि से अधिक स्पष्ट है। यह परिच्छेद शायद कई लोगों की तुलना में कम स्पष्ट है क्योंकि इसके व्याख्याकार इस बात पर सहमत नहीं हैं कि यह युगांतशास्त्र के बारे में बात कर रहा है या क्या यह वर्तमान समय के बारे में बात कर रहा है।

मैं सोचने के लिए अधिक इच्छुक हूँ, क्योंकि यह अध्याय 2 में हमने जो देखा, उसके विपरीत प्रतीत होता है, कि यह आलंकारिक रूप से वर्तमान समय के बारे में बात कर रहा है, और इस मार्ग में बहुत सारे आंकड़े हैं।

जब आप आलंकारिक भाषा में आते हैं, तो आप एक ऐसे क्षेत्र में होते हैं जहां मुझे लगता है कि दुभाषिया को संदर्भ के आधार पर निर्णय लेने के लिए मजबूर किया जाता है। एक दिशा या दूसरी दिशा में जाने के लिए सबूतों को तौला जाना चाहिए, और राय में अंतर होना तय है। कुछ चीजें ऐसी हैं जो अधिक भौतिक हैं: "पेड़ ताली बजाते हैं।" कई लोग स्वीकार करते हैं कि यह आलंकारिक है - कोई भी इस पर बहस नहीं करेगा। लेकिन फिर भी वहां एक तरह की निरंतरता है जहां आप स्पष्ट रूप से आलंकारिक से कम स्पष्ट रूप से आलंकारिक की ओर बढ़ते हैं। कुछ मामले आलंकारिक हो भी सकते हैं और नहीं भी। अन्य मामले स्पष्टतः शाब्दिक हैं। यहां हम कहीं बीच में हैं। आपको बस इस पर निर्णय लेना है, और एक व्यक्ति कहेगा कि यह शाब्दिक है और फिर अगला व्यक्ति कहेगा, "नहीं, मुझे लगता है कि यह आलंकारिक है।" संभवतः किसी को भी हठधर्मी नहीं होना चाहिए। यशायाह इस प्रकार की व्याख्यात्मक समस्याओं से भरा है: आकृति, शाब्दिक, क्या यह वर्तमान समय के बारे में बात कर रहा है, क्या यह सहस्राब्दी के बारे में बात कर रहा है? इन अंशों पर निर्णय लेना कठिन है।

जेरूसलम/सियोन = परमेश्वर के सच्चे लोग आइए इसके साथ थोड़ा और आगे बढ़ें। मैंने सुझाव दिया कि ऐसा लगता है कि अनुच्छेद का सामान्य जोर यह है कि भगवान अपने लोगों की तीर्थ यात्रा पर उनकी रक्षा करेंगे। मैंने पहले सुझाव दिया था कि इसका अर्थ यह होगा कि "यरूशलेम" और "सियोन" को परमेश्वर के सच्चे लोगों के प्रतीक के रूप में समझा जाना चाहिए, क्योंकि जब आप पद 3 पर जाते हैं, तो आप देखते हैं, "जो लोग सियोन में बचे हैं, जो अंदर ही बचे हैं यरूशलेम में जितने जीवित लोग अंकित हैं वे सब पवित्र कहलाएंगे।" कुछ लोग कह सकते हैं, "ठीक है, अब एक मिनट रुकें: यह निष्कर्ष निकालने का क्या आधार है कि "सियोन" और "यरूशलेम" का न केवल उस शहर के शाब्दिक निवासियों के लिए बल्कि वहां के लोगों के लिए भी लाक्षणिक या प्रतीकात्मक महत्व हो सकता है। भगवान आम तौर पर? वह सिद्धांत वह है जो अक्सर सहस्राब्दी व्याख्याकारों

द्वारा उपयोग किया जाता है जो चर्च में "यरूशलेम" या "सिय्योन" या "इज़राइल" की पूर्ति की बात करते हैं। "इज़राइल" चर्च का प्रतीक बन जाता है, "यरूशलेम" और "सिय्योन" चर्च का प्रतीक या आकृति बन जाते हैं। मुझे लगता है कि एक मामला बनाया जा सकता है कि पुराने नियम में पहले से ही "यरूशलेम" के लिए एक प्रतीकात्मक महत्व पाया जा सकता है, बिना वसीयतनामा, इज़राइल और चर्च के बीच संबंधों के मुद्दे में शामिल हुए।

परमेश्वर के सच्चे लोगों पर भजन 87:4-6 पहले से ही पुराने नियम में आप ऐसे अंश पा सकते हैं जिनमें "सिय्योन" या "यरूशलेम" एक प्रतीकात्मक, या आलंकारिक, महत्व लेता है। मुझे लगता है कि इस संबंध में सबसे दिलचस्प भजन 87:4-6 है। भजन 87 एक छोटा भजन है, आइए इसे देखें। इसमें लिखा है: "उसने अपनी नींव पवित्र पर्वत पर रखी है; यहोवा को याकूब के सब निवासस्थानोंसे बढ़कर सिय्योन के फाटक प्रिय हैं।" ध्यान दें श्लोक 3; आपने शायद यह पंक्ति कहीं सुनी होगी, "हे परमेश्वर के नगर, तेरे विषय में गौरवशाली बातें कही गई हैं।" "हे परमेश्वर के नगर, तेरे विषय में महिमामय बातें कही जाती हैं। मैं राहाब और बाबुल को उन लोगों में दर्ज करूंगा जो मुझे स्वीकार करते हैं - फिलिस्तिया भी, और सूर, कुश के साथ - और कहूंगा," - ये विदेशी लोग - "यह सिय्योन में पैदा हुआ था।" सचमुच, सिय्योन के विषय में यह कहा जाएगा, 'यह और वह दोनों उसी में उत्पन्न हुए, और परमप्रधान आप ही उसे स्थिर करेगा।' यहोवा लोगों के रजिस्टर में लिखेगा: 'यह सिय्योन में पैदा हुआ था।' जैसे ही वे संगीत बनाते हैं वे गाएंगे, 'मेरे सभी झरने तुम में हैं।'"

जे. बार्टन पायने उस पर टिप्पणी करते हैं: "सिय्योन में जन्म लेने का अर्थ उन लोगों के उद्धार में भाग लेने से न तो अधिक है और न ही कम है जो परमेश्वर को जानते हैं।" भजन संहिता 87:4 और 5, "यह उसी में उत्पन्न हुआ," "ये परदेशी लोग हैं।" वह इसे यहोवा की नैतिक और धार्मिक स्वीकृति के सन्दर्भ में बोलते हैं। वह व्यक्ति जिसका नाम यरूशलेम में जीवन भर के लिए दर्ज किया गया है। यशायाह 4:3 पर वापस जाएँ: "जो सिय्योन में बचे हुए हैं, और यरूशलेम में रह गए हैं, वे सब पवित्र कहलाएँगे, अर्थात् यरूशलेम में रहनेवालों में से जितनों के नाम लिखे हैं। वह मनुष्य जिसका नाम यरूशलेम में जीवन भर के लिये लिखा गया है" (यशायाह 4:3)। प्रभु लोगों का पंजीकरण करता है - भजन 87:6 से वाक्यांश लेते हुए: "प्रभु लोगों के रजिस्टर में लिखेंगे।" यह

कहना उचित है कि वह आध्यात्मिक रूप से सिथ्योन का नागरिक है। आपके उद्धरणों के पृष्ठ 10, बाइबिल के जॉर्डरवन पिक्टोरियल इनसाइक्लोपीडिया में जेरूसलम पर पायने के लेख के तहत तीसरा पैराग्राफ, "यदि वाक्यांश 'सिथ्योन में पैदा हुआ' उन लोगों के उद्धार का प्रतिनिधित्व करता है जो भगवान को जानते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि भजनकार भी सूचीबद्ध करता है मिस्र, बेबीलोन, फिलिस्तिया, सोर और इथियोपिया के लिए राहब 'उनमें से मुझे स्वीकार करते हैं।' और यरूशलेम के मूल निवासियों के आश्वासन का वर्णन करने के बाद, वह आगे कहते हैं, 'प्रभु लोगों के रजिस्ट्रों में लिखेंगे, "यह वहीं पैदा हुआ था"' (भजन 87:6)। जैसा कि क्रेगी ने संक्षेप में बताया है, अन्य राष्ट्र यहोवा के लोगों के रूप में इज़राइल के साथ नामांकित हैं। इससे चर्च उग्रवादी के संदर्भ में नए नियम का उपयोग आता है और नए नियम में यह उल्लेख है कि ऊपर यरूशलेम स्वतंत्र है और वह हमारी माता है (गलातियों 4:26)। या विजयी चर्च का संदर्भ जब यह बताता है कि आप सिथ्योन पर्वत पर, जीवित ईश्वर के शहर, स्वर्गीय यरूशलेम, पहले जन्मे लोगों की सभा में आए हैं जो स्वर्ग में नामांकित हैं। तो मुझे ऐसा लगता है कि पुराने नियम में ही आप इस बात के प्रमाण पा सकते हैं कि ऐसे स्थान हैं जहाँ "सिथ्योन" और "यरूशलेम" का उपयोग ईश्वर के सच्चे लोगों के लिए आलंकारिक या प्रतीकात्मक रूप से किया जाता है और भजन 87 इसके लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग है।

यशायाह 4:2-4 मसीहा के आशीर्वाद लेकिन यदि आप यशायाह 4 के पद 2 में उस महत्व को लेते हैं, तो आपके पास मसीहा और उसके लोगों के लिए लाए गए आशीर्वाद का संदर्भ है। जो लोग सिथ्योन में बचे हैं, जो यरूशलेम में बचे हैं, जो पवित्र कहलाते हैं, जो यरूशलेम में रहने वालों में दर्ज हैं, वे परमेश्वर के सच्चे लोग हैं। मसीहा उन लोगों के लिए ये आशीर्वाद लाएगा जो उसके हैं। श्लोक तीन इंगित करता है कि आशीर्वाद किस पर लागू होता है। जब आप श्लोक 4 पर आते हैं, तो आपके पास श्लोक 3 में दिए गए वादे की पिछली स्थिति होती है: "यहोवा सिथ्योन की स्त्रियों की गंदगी को धो देगा; वह न्याय की आत्मा और आग की आत्मा के द्वारा यरूशलेम से खून के धब्बे साफ करेगा।" वह गंदगी को धो देगा।

मुझे लगता है कि यहां आपको भौतिक से नैतिक अर्थ की ओर स्थानांतरित करने की

आवश्यकता है; गंदगी और बाहरी गंदगी नहीं, बल्कि लोगों की नैतिक, आध्यात्मिक स्थिति साफ हो जाएगी। वह गन्दगी धो देगा, खून के धब्बे साफ़ कर देगा। खून का दोष है जो धुल जाएगा। और वह कैसे धुलेगा? पवित्र आत्मा के शुद्धिकरण कार्य द्वारा। वह न्याय की आत्मा और आग की आत्मा से गंदगी को धो देगा, खून के दागों को साफ कर देगा। तो मुझे ऐसा लगता है कि यह अनुच्छेद ईश्वर के लोगों के रूप में आरक्षित लोगों के बारे में बात करता है, जो यरूशलेम की इन महिलाओं के साथ पहले जो हुआ था, उसके विपरीत हैं, जिन्होंने अपनी सुंदरता को अपने गहनों और बढ़िया कपड़ों आदि के अलंकरण में पाया था। यह अनुच्छेद ईश्वर के लोगों के रूप में संरक्षित लोगों की बात करता है जो मसीह में अपना अलंकरण पाते हैं। “उस समय यहोवा की शाखा सुन्दर और महिमामय होगी, और भूमि की उपज इस्राएल के बचे हुएों का गौरव और महिमा होगी।” यह मसीह में है कि वे अपनी सुंदरता और अपनी महिमा पाएंगे। परमेश्वर की आत्मा उन्हें दोष और गंदगी से शुद्ध करेगी।

यशायाह 4:5-6 परमेश्वर की सुरक्षा तब पद 5 और 6 में उस सुरक्षा और आवरण की बात की जाती है जो मसीह अपने लोगों को प्रदान करेगा। दिन में धुआं और रात में धधकती आग की चमक," जब वह अपने लोगों के सामने जाता था तो जंगल में भटकने की कल्पना करता था। उस तरह की भाषा और उस तरह की कल्पना के आधार पर आप कह रहे हैं कि भगवान अपने लोगों की रक्षा करेंगे। दिन की गर्मी में शरण और छाया होगी, तूफ़ान और वर्षा से शरण और छिपने का स्थान होगा।

यह यशायाह 43, पहले कुछ छंदों के समान ही विचार है, लेकिन एक अलग आकृति के साथ। यशायाह 43 एक सुंदर मार्ग है। यशायाह 43:2: “जब तू जल में होकर चले तो मैं तेरे संग संग रहूँगा, जब तू नदियों में होकर चले तो वे तुझ पर न पकेँगी, जब तू आग में चले तो तू न जलेगा, न आग तुझे जलाएगी।” ।” दूसरे शब्दों में, हमारे चारों ओर ऐसा कुछ है जो नुकसान पहुंचा सकता है, नष्ट कर सकता है और हम उसमें से कुछ का अनुभव करेंगे। हम जल से नहीं बचेंगे, परन्तु जल हम से बहनेवाला नहीं है। हमें आग के बीच से गुजरना होगा, लेकिन आग हमें भस्म नहीं करेगी क्योंकि प्रभु अपने लोगों की सुरक्षा करते हैं। आपके उद्धरणों का पृष्ठ 10, पृष्ठ के नीचे, ईजे यंग, खंड 1 से

लिया गया है: "झूठी महिमा और आभूषण के स्थान पर, 2:5-4:1, "वास्तविक और वास्तविक महिमा और आभूषण, अर्थात् प्रभु स्वयं प्रकट होंगे," यशायाह 4:2, वह प्रभु की शाखा है। यह यशायाह 28:5

के समीकरण से सिद्ध होता है। अंत में, यह स्पष्ट रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए कि केवल जब वाक्यांश, "भूमि का फल" मसीहा को संदर्भित करता है, तो इसके बाद जो कुछ भी होता है उसके साथ कोई संतोषजनक संबंध होता है। अन्य विचारों पर, कनेक्शन टूट गया है। यदि यशायाह केवल भूमि की उत्पादकता के बारे में बात कर रहा है तो इसे दोबारा पेश न करने का विचार तुरंत छोड़ दिया जाता है। वास्तव में, यह एक आकस्मिक विचार है, और इसके प्रस्तुतीकरण का कारण खोजना कठिन है। दूसरी ओर, यदि यह मसीहा की बात हो रही है, तो उन्होंने एक सामान्य कथन दिया है, जिसका विवरण वह निम्नलिखित छंदों में प्रस्तुत करते हैं। इसलिए मैं मिलेनियल होने के नाते इस संरचना 2:1-4 पर वापस आने के लिए इच्छुक हूं, जैसा कि हमने पिछले घंटे में चर्चा की थी। मैं यशायाह 4:2-6 को वर्तमान समय में, या हर समय, यहां तक कि पुराने नियम के समय में भी, अपने सच्चे लोगों की रक्षा करने वाले ईश्वर के एक आलंकारिक विवरण के रूप में देखने के लिए इच्छुक हूं। परन्तु जो परमेश्वर के सच्चे लोग हैं, परमेश्वर अपने पुत्र के कार्य के द्वारा उन्हें सुरक्षा प्रदान करेगा।

भजन: "तेरी गौरवशाली बातें बोली जाती हैं" आप में से अधिकांश लोग "तेरी गौरवशाली बातें बोली जाती हैं" भजन से परिचित हैं। हम अक्सर यही गाते हैं। शब्द सुनो. शब्द इस प्रकार हैं: "हे हमारे परमेश्वर के सिव्योन नगर, तेरे विषय में महिमामय बातें कही जाती हैं: जिसका वचन टल नहीं सकता, उसी ने तुझे अपने निज निवास के लिये बनाया है; युगों की चट्टान पर स्थापित, क्या चीज़ आपकी निश्चित शांति को हिला सकती है? मोक्ष की दीवारों से घिरे होने के कारण, आप अपने सभी शत्रुओं को देखकर मुस्कुरा सकते हैं।" दूसरा पद, सीधे हमारे अंश, यशायाह 4 से लिया गया है: "हर एक बस्ती के चारों ओर मंडराते हुए बादल और आग को महिमा और आवरण के रूप में प्रकट होते देखो" - छंद 5 और 6 - "दिखा रहा है कि प्रभु निकट है ... धन्य निवासियों सिव्योन मुक्तिदाता के खून में धुल गया! यीशु, जिस पर उनकी आत्माएँ भरोसा करती हैं, उन्हें परमेश्वर का

राजा और याजक बनाता है।” अंतिम छंद. "उद्धारकर्ता, यदि मैं सिय्योन शहर का हूँ, तो मैं अनुग्रह से इसका सदस्य हूँ।" देखें कि इस भजन के लेखक ने इस अंश की किस प्रकार व्याख्या की है। “यदि मैं अनुग्रह से सिय्योन नगर का सदस्य हूँ, तो संसार मेरा उपहास करे या दया करे, मैं तेरे नाम का गौरव करूंगा। संसारी का सुख, उसका सारा दिखावा और दिखावा लुप्त हो रहा है; ठोस खुशियाँ और स्थायी खजाना सिय्योन के बच्चों के अलावा कोई नहीं जानता। जॉन न्यूटन द्वारा लिखित, हेडन द्वारा संगीत। यह एक महान भजन है और हम इसे अक्सर गाते हैं। जब आप इसे गाते हैं, तो क्या आपने कभी शब्दों और इस अंश के साथ संबंध के बारे में सोचा है? कुछ लोग सोचते हैं कि यह मार्ग सहस्राब्दि है। अगर उन्हें लगता है कि यह मिलेनियल है, तो बेहतर होगा कि वे अगली बार वह भजन न गाएं। भजन लेखक ने इसकी व्याख्या आलंकारिक तरीके से की है, जैसे सिय्योन भगवान के सच्चे लोग हैं, और हम उस शरीर के सदस्य हैं, कि हम मसीह में विश्वास करते हैं। और यह परिच्छेद उसी के सन्दर्भ में उपयुक्त है।

यशायाह 4:1-6 को सहस्राब्दी काल (?) या तीर्थ यात्रा में रेव 20 के साथ जोड़ते हुए , मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि हम अपनी व्याख्या किसी भजन लेखक से प्राप्त करें, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि अध्याय 2 और में वर्णित स्थितियां अन्यत्र संकेत मिलता है कि खतरा हटा दिया गया है, शैतान बंधा हुआ है, डरने की कोई बात नहीं है, धमकी देने वाली कोई बात नहीं है। इस परिच्छेद में कुछ धमकी भरी बात है। तो मुझे ऐसा लगता है कि आप किसी अलग समय के बारे में बात कर रहे हैं। यह संभवतः इस बात पर निर्भर करता है कि आप उनमें से कुछ चीज़ों को कितनी दूर तक आगे बढ़ाते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि शैतान के बंधे होने के बारे में प्रकाशितवाक्य 20 के अंश से, उस अवधि के दौरान जब शैतान बंधा हुआ है, ऐसा कुछ नहीं होगा जो किसी को भयभीत कर सके। उस अवधि के अंत में, जब वह मुक्त हो जाएगा, तो ऐसे लोग होंगे जो फिर से उसकी सेना में शामिल हो जाएंगे, और निश्चित रूप से, सहस्राब्दी अवधि के अंत में, मुझे लगता है कि फिर से आपका विरोध पैदा होगा। तो आप यह भेद कितना पूर्णतः स्पष्ट करते हैं? यदि आप मीका मार्ग को देखें जहां यह कहा गया है, “प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही बेल और अंजीर के वृक्ष तले निवास करेगा; डरने की कोई बात नहीं होगी,” यह यशायाह 4:6 से काफी अलग लगता है जब यह कहता है, "उसे दिन की गर्मी

से बचने का आश्रय, तूफान और बारिश से शरण और छिपने का स्थान मिलेगा।" मुझे तो बस यही लगता है कि जब डरने की कोई बात नहीं होती और जब तूफान और बारिश होती है तो माहौल अलग होता है, जिसका इस्तेमाल खतरे का संकेत देने के लिए किया जाता है। लेकिन मैं मानूंगा कि शायद, यहां फिर से, डिग्री का मामला है कि आप उस अंतर को कितनी दूर तक ले जा रहे हैं। या आप कह सकते हैं कि यह उतना बड़ा अंतर नहीं है। हालाँकि, निस्संदेह, वहाँ एक अंतर है।

अब मैं उससे सहमत होऊंगा. मेरे लिए यहां चित्र तीर्थ यात्रा का है: बारिश हो रही है, तूफान है, लेकिन भगवान के सच्चे लोग निश्चित हो सकते हैं कि भगवान अपनी दयालुता में इज़राइल और उसके कबीले की तरह उनका मार्गदर्शन करेंगे और उन्हें दुष्ट से बचाएंगे। मेरे लिए यह एक वास्तविकता है; हम जो अनुभव करते हैं वह यहां आंकड़ों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।

व्याख्या के तरीके और यशायाह में जटिल भविष्य के लिए

वेन्नॉय का दृष्टिकोण मुझे कुछ अन्य संक्षिप्त टिप्पणियाँ करने दीजिए और फिर हम विराम लेंगे। मेरा मानना है कि हमें दो चरम सीमाओं से सावधान रहना होगा। जब आप आम तौर पर दुभाषियों को देखते हैं तो आप पाएंगे कि कुछ लोगों को यशायाह में सहस्राब्दी की कोई तस्वीर दिखाई नहीं देगी। वे सहस्रवर्षीय हैं। कोई सहस्राब्दी नहीं है, इसलिए निस्संदेह, आप यशायाह में कोई सहस्राब्दि नहीं पा सकते। उन्हें सहस्राब्दि की कोई तस्वीर ही नहीं दिखती। दूसरी ओर, आपको ऐसे कुछ व्याख्याकार मिल सकते हैं जो यशायाह की लगभग हर बात में सहस्राब्दी को देखते हैं। मुझे लगता है, यदि आप यशायाह की पुस्तक पर ध्यान से काम करेंगे, तो आप पाएंगे कि यशायाह भविष्य की ओर देखता है और ऐसा करने में वह कई विषयों से निपटता है। पुस्तक में भविष्य का एक संपूर्ण व्यापक परिप्रेक्ष्य खुलता है। प्रारंभ में, आप पुराने नियम के काल और आने वाले निर्वासन में इज़राइल पर भगवान का क्रोध देखते हैं। वह अक्सर उस विषय को संबोधित करते हैं। इस्राएल बँधुआई में, बेबीलोनियों के हाथ में जा रहा है। वह निर्वासन से परे देखता है और साइरस के अधीन वापसी देखता है। वह उससे परे देखता है और वह मसीहा, पीड़ित सेवक, मसीह के आगमन को देखता है, जो स्वयं पाप के लिए बलिदान होगा। और यह मुझे इससे परे लगता है - और यह बहुत स्पष्ट हो जाता है और हम इनमें से कुछ अंशों को देखेंगे - वह गैर-यहूदियों के माध्यम

से सुसमाचार के प्रसार को देखता है। और मुझे लगता है कि जब आप इस मार्ग पर आते हैं तो वह अपने लोगों की तीर्थयात्रा के दौरान भगवान की सुरक्षा को देखता है। यह परमेश्वर के सच्चे लोगों को संदर्भित करता है। उससे परे वह सहस्राब्दि युग के आशीर्वाद को देखता है, और उससे परे वह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में शाश्वत राज्य के आशीर्वाद को देखता है। तो आप देखिए, आपके पास भविष्य की वास्तविकताओं की एक पूरी श्रृंखला है जो यशायाह की पुस्तक में वर्णित है। पुस्तक में ईश्वर के मुक्ति कार्यक्रम के उन सभी चरणों का उल्लेख किया गया है। जब आप पुस्तक पर आते हैं, तो आपको यह निर्धारित करने का प्रयास करना होगा कि किसी दिए गए अनुच्छेद में इनमें से कौन सा चरण दिखाई दे रहा है। किसी को एक ओर से सभी सहस्राब्दी संदर्भों को हटाने का प्रयास नहीं करना चाहिए, या दूसरी ओर सभी अंशों को एक सहस्राब्दी संदर्भ में जबरदस्ती लाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। अनुच्छेदों को स्वयं बोलने दें, विशेष रूप से मिलेनियल या न मिलेनियल के मुद्दे पर।

मुझे ऐसा फिर से लगता है कि - मैंने पहले इसका उल्लेख किया था - कि एक गैर-डिस्पेंसेशनल , पूर्वसहस्राब्दी दृष्टिकोण आपको इस तरह के एक मार्ग पर आने की अनुमति देता है और इसे आपको वहां ले जाने देता है जहां इसकी सामग्री की विशिष्टताएं आपको "सिस्टम" के बिना ले जाती हैं। पहले से निर्णय लें . इसका संदर्भ चर्च से नहीं हो सकता , जैसा कि कुछ युगपूर्व सहस्राब्दिवादी कहेंगे; यह सहस्राब्दी होना चाहिए। और जब आप यशायाह 2 पर आते हैं, तो दूसरी ओर उनमें से कुछ कहेंगे कि यह सहस्राब्दी नहीं हो सकता है, इसका संदर्भ चर्च से है क्योंकि कोई सहस्राब्दी नहीं है। आपको ऐसी चीजों को बाहर करने के लिए सावधान रहना होगा, और मुझे ऐसा लगता है कि यशायाह भगवान के आने वाले मुक्ति कार्यक्रम और उसके कार्यान्वयन के इन सभी भविष्य के चरणों को देखता है। हमें इन परिच्छेदों पर आना चाहिए और परिच्छेद की अंतर्निहित विशिष्टताओं को ही आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। भविष्य के कई चरण हैं: अन्यजातियों तक सुसमाचार का प्रसार, उनकी तीर्थयात्रा के दौरान अपने लोगों पर भगवान की सुरक्षा, सहस्राब्दी युग का आशीर्वाद, शाश्वत राज्य, नया स्वर्ग और नई पृथ्वी।

ठीक है, आइए एक ब्रेक लें और हम अपने अगले भाग और अगले घंटे से आगे बढ़ेंगे।

क्रिस्टी लीच
द्वारा प्रतिलेखित प्रारंभिक संपादन कार्ली गीमन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादन
डॉ. पेरी फिलिप्स
द्वारा अंतिम संपादन डॉ. पेरी फिलिप्स द्वारा पुनः सुनाया गया